जीवन-रेखा

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-1)

डॉ. सुरेश चंद्र पाण्डेय

जीवन-रेखा

अज्ञेय-साहित्य विमर्श

(खण्ड-1)

डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय

अव. प्राप्त रीडर-अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डी.ए.वी.पी.जी कॉलेज

आजमगढ़ (उ.प्र.)

भूमिका

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिली शरण गुप्त, प्रेमचंद और निराला के साथ, हिन्दी के हित-संर्वधन में अज्ञेय के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता है। यह अज्ञेय ने कहा था-सारा राष्ट्र अगर अंग्रेजी बोलेगा तो भारतीय भाषाओं का विकास कैसे होगा? एक रचनाकार और नागरिक की हैसियत से उन्होंने स्वाधीनता को मानव जीवन का सबसे बड़ा मूल्य और चरम लक्ष्य घोषित किया; और यह भी कि स्वाधीनता में आस्था मानव के मानवत्व की कसौटी भी है लेकिन इस शर्त के साथ कि सब की स्वाधीनता में ही अपनी स्वाधीनता है। पूरी दृढ़ता के साथ उन्होंने रचनाकार-कलाकार में ही स्वाधीनता का पक्ष प्रस्तुत किया क्योंकि उनका विश्वास था कि स्वाधीन समाज में ही रचना और कला जीवित रह सकती है, विकास कर सकती है और रचनाकार आध्यात्मिक स्वंतत्रता प्राप्त कर सकता है।

अज्ञेय की सर्जनशीलता बहुआयामी है, उसका क्षेत्र व्यापक है। अपनी संस्कृति और परंपरा से लगाव और जुड़ाव के अनेक, बहुविध प्रमाण उनकी रचनाओं में बिखरे पड़े हैं। हिन्दी और हिन्दी के रचनाकार को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठित करने के लिये उनके प्रयास श्लाध्य हैं यद्यपि इसके लिए उन्हें अपनों की ही कम मार नहीं झेलनी पड़ी। अज्ञेय ने आग्रह की सीमा तक अनुभव किया और उनका यह विश्वास था- 'रचना की भाषा संस्कृति की आंख है। हमें वह औख खुली रखनी है इसके लिए उसे प्रतिदिन बहते स्वच्छ जल से धोते रहने की उपयोगिता है।' अपने देश की पुराण गाथाओं और मिथकों में उनकी आस्था का कारण उनका यह विश्वास था कि किसी देश के गहनतम रहस्यों तक पहुंचने की पहली सांस्कृतिक इकाई पुराण गाथाएं होती हैं। जानकी जीवन यात्रा और भागवत यात्रा के माध्यम से उन्होंने संस्कृति के मूल स्रोतों तक पहुंचने की, उस का मर्म समझने की कोशिश की। वत्सल निधि द्वारा आयोजित लेखक शिविरों के माध्यम से उन्होंने नयी प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया; प्रतिष्ठित लेखकों की मद्धिम पड़

रही ऊर्जा की आँच को कुरेद कर उसे दीप्त भी किया। शब्द की सत्ता में उनकी श्रद्धा थी। लोक मानस की गहराई में जा कर उसमें दबे-पड़े शब्दों की खोज और उन्हें नए अर्थों से अभिषिक्त और मंडित करने के रचनाकार के दायित्व का उन्होंने निर्वाह किया।

आधुनिक परिवेश में रचनाकार के समक्ष जो संकट और चुनौतियाँ उपस्थित हैं या हो रही हैं, खास तौर पर संप्रेषण-रचना, रचनाकार और पाठक के बीच संवाद को लेकर, अज्ञेय को उन का तीखा बोध था। यह बोध परंपरा की पृष्ठ-भूमि में ही उपजा और पनपा। आधुनिक युरा में कविता की वाचिक पंरपरा के महत्व की ओर अज्ञेय ने सबसे पहले लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। कविता की वाचिक परंपरा के परिप्रेक्ष्य में अज्ञेय ने संप्रेषण की पुरजोर वकालत की, रचनाकारों को संचार-साधनों द्वारा पैदा किए जा रहे आगामी खतरे के प्रति सावधान रहने के लिए सजग किया। परंपरा की आँच पर जब रचना पकती है तभी उस में स्वाद आता है।

अज्ञेय को इसकी परख थी। संप्रेषण की समस्या भी कोई नयी नहीं है। उसका संदर्भ जरूर नया है। 12वीं शती ईसवी के आस-पास की रचना- 'संदेश रासक' का रचयिता अब्दुल रहमान (अद्दहमाण) लोक भाषा का बड़ा विनयशील कवि था। उसने अनुभव किया कि उसकी लोक भाषा की रचना को पंडित लोग कुकवित्त समझेंगे, मूर्ख जन उस की रचना की रसपेशलता का मर्म नहीं समझ सकेंगे, इसलिए उसनें निर्देश किया- जो न मूर्ख हैं, न पंडित है अपितु मध्यम श्रेणी के हैं, उन्हीं के सामने मेरी रचना सदा, हर दिन पढ़ी जाय-

णहु रहइ बुहह कुकवित्त रेसु,
अबुहतणि अबुहह णहु पयेस।
जिण मुक्ख ण पंडित मज्झयार
तिहि पुरउ पढिब्बउ सच्चवार।

यही वह परिप्रेक्ष्य है जिस में परंपरा एक प्रेरक-शक्ति बनती है।

हमारी शूरू से यह धारणा रही है कि अज्ञेय के सभी साहित्य का समुचित मूल्यांकन नहीं हो पा रहा है। इस का एक कारण है-अज्ञेय की सभी कृतियों का सुलभ न होना और इस कारण अज्ञेय सामान्य अध्येताओं की पहुंच से बाहर हो जाते हैं। खेद का विषय है-अज्ञेय की कोई रचनावली नहीं तैयार हो पायी है, वत्सल निधि और अज्ञेय के घनिष्ठ संपर्क और सान्निध्य का दावा करने वाले लेखकों के बावजूद। दूसरा प्रमुख कारण यह है कि अज्ञेय संदर्भ-बहुल (संदर्भ से हमारा आशय है-परंपरा -साहित्यिक और सांस्कृतिक-का संदर्भ) रचनाकार हैं और जिस उच्च धरातल से वे रचना करते हैं वहां तक पहुंचने के लिए ईमानदारी पूर्वक श्रम और अभ्यास की जरूरत पड़ती है, दूसरे शब्दों में पात्रता अर्जित करनी पड़ती है। उन्होंने एक जगह कहा भी है-कविता तो तभी मिलेगी जब पहले से स्वागत का, अभ्यर्थना का, भाव लेकर हम उसके जगत में प्रवेश करें। यह एक कल्पक कवि की वाणी है, चेतावनी है।

तीसरा कारण है: हिन्दी आलोचना की वर्तमान प्रवृत्तियाँ। आधुनिक हिन्दी आलोचना का बहुत बड़ा हिस्सा मतवाद-प्रेरित, विद्वेषपूर्ण, पूर्वग्रह ग्रस्त और उठा-पटक की भावना से प्रेरित है। समालोचक और समालोचना का मूल धर्म है कृति के मर्म को खोलना, उसे सहृदय-संवेद्य बनाना, पाठक को शिक्षित करना। लेकिन समालोचना भटक गयी है, असहज हो गयी है और ऐसे भी आलोचक हैं जो पांडित्य प्रदर्शन में गौरव का अनुभव करते हैं-जिसे अंग्रेजी में कहा जाता है- 'टू इनजॉय द इनकाम्प्रिहेंसिबिलिटी ऑफ द रीडर'।

अज्ञेय साहित्य पर जो सार्थक समालोचना सहृदय समालोचकों द्वारा लिखी गयी है वह उनके पक्ष-विशेष को जरूर उभारती है लेकिन अज्ञेय साहित्य का पूरा परिदृश्य उसके माध्यम से सामने नहीं आ पाया है। अर्थात् वह 'पेनीट्रेटिव' तो कही जा सकती है, इलेस्ट्रेटिव' नहीं है। अज्ञेय समग्र भाव के कवि हैं। यह उन की विशेषता है। उनके सर्जनारत व्यक्तित्व के निर्माण में, इस देश की संस्कृति, परंपरा, आर्ष ग्रंथ,

वाल्मीकि, कालिदास और भवभूति के आदर्श इतिहास-पुराण और मिथक, देशाटन, देश-विदेश के साहित्य का अध्ययन-मनन; विभिन्न संस्कृतियों का अध्ययन, अन्य भाषाओं के कवियों से संवाद; प्रकृति की विराटता का साक्षात्कार; भारत का स्वाधीनता संघर्ष; भारत विभाजन की त्रासदी; स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद समाज, राजनीति और राजनीतिज्ञों का बदलता चेहरा और मिजाज; इस सब के बीच राष्ट्रत्व की भावना और अभिव्यक्ति के माध्यम हिन्दी को समर्थ और सक्षम बनाने का संकल्प, 'श्रमकर, कमकर, शिल्पी, स्रष्टा,' 'कोदई खाने वाला, पेड़ के पत्तों और उस की जड़ों पर गुजारा करने वाला, अदना इन्सान, वैज्ञानिक प्रगति और विचारों में भी प्रदूषण आदि अनेक बहुरंगी, वैविध्यपूर्ण तत्वों का योगदान है।

इतने और ऐसे विशाल फलक वाले रचनाकार का अध्ययन उस के समग्र साहित्य को सामने रखकर, उसके अनुभवों और आदर्शो की पृष्ठभूमि में किया जाय, यही वांछनीय है। आलोचना के 'स्मोक-स्क्रीन' ने अज्ञेय और पाठकों के बीच दूरी बढ़ाने का ही काम अधिक किया है। किसी रचनाकार की यदि एक भी रचना पाठकों को तोष दे जाती है, पाठकीय आस्वादकता की कसौटी पर खरी उतरती है, तो रचना सफल है, रचनाकार कृत कार्य है। साहित्य पाठक के लिए होता है, और जो समालोचक अच्छा पाठक नहीं है उसके लिए नहीं और पूर्वग्रह ग्रस्त समालोचक के लिए तो बिकुल नहीं, उसके दावे चाहे कितने भी बड़े क्यों न हों। अज्ञेय ऐसे रचनाकार हैं जिनकी रचनाएं उपर्युक्त कसौटी पर खरी उतरती है। हमारी यह मूल दृष्टि इस 'विमर्श' की प्रेरणा-भूमि है।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध-योजना की रूप-रेखा निर्धारित की गयी है जिसकी पूर्व प्रतिज्ञा में स्वीकार किया गया है-अज्ञेय एक कृती, सर्जनशील, रचनाकार हैं। पश्चिम की अंधाधुंध नकल ने भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक चेतना और हिन्दी साहित्य के समक्ष एक गंभीर संकट और चुनौती प्रस्तुत कर दी है। अज्ञेय साहित्य में ऐसा बहुत कुछ है जो उपर्युक्त संकट के क्षणों में हमें अपनी जमीन पर खड़ा रहने और आत्म-विश्वास की रक्षा करने की शक्ति प्रदान करता है। अत: पूर्व ग्रह मुक्त होकर साहित्य के अध्येता की

हैसियत से अज्ञेय साहित्य के सभी पक्षों का सम्यक् मूल्यांकन करना, अज्ञेय के कृतित्व के भीतर पैठ कर, कृतियों में निहित विचार दर्शन, भाव-राशि को प्रकाश में लाना, हमारा उद्देश्य रहा है।

किसी रचनाकार के जीवन के विषय में कुछ तथ्य पहले से ही उपलब्ध होते हैं (जैसे जन्म स्थान, समय, कुल, शिक्षा आदि) -ये 'गिवेन' (Given) कोटि के होते हैं। और उन में फेर-बदल की कल्पना भी नहीं की जा सकती। कम-से-कम आधुनिक रचनाकारों के बारे में यह सुविधा उपलब्ध है। हां, रचनाकार के जीवन में घटित के आधार पर रचनाकार के व्यक्तित्व का रूप खड़ा किया जाता है। उसका विश्लेषण किया जाता है। अज्ञेय का व्यक्तित्व थोड़ा जटिल अवश्य है क्योंकि अज्ञेय ने स्वयं ही अपने व्यक्तित्व का प्रकारान्तर से मूल्यांकन किया है। (अज्ञेय : अपनी निगाह मे); दूसरों ने भी अज्ञेय के व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया है। इस के अतिरिक्त अज्ञेय के व्यक्तित्व का एक पक्ष नितांत उनका निजी है जिस में वे किसी को प्रवेश नहीं करने देते और इन सब के ऊपर अज्ञेय के व्यक्तित्व का एक रूप वह है जो उनकी रचनाओं में से उभरता है। किस बिन्दु पर ये सभी आ कर मिलते हैं इसकी पहचान ही अज्ञेय के व्यक्तित्व को जटिल बना देती है। अज्ञेय के व्यक्तित्व का विश्लेषण, इस प्रबंध के प्रथम अध्याय- 'जीवन-रेखा : व्यक्तित्व' का मुख्य विषय है। अज्ञेय के जीवन से संबंधित घटनाओं का हम ने केवल ब्यौरा नहीं दिया है बल्कि इन घटनाओं के भीतर से आकार ग्रहण करने वाले स्वतंत्र-चेता अज्ञेय के सर्जक व्यक्तित्व की रेखाओं को पहचानने की हमने कोशिश की है। हम ने यह पहचानने की कोशिश की है कि एक पराधीन देश को आत्म-सजा रचनाकार और स्वाधीन देश के उत्तरदायित्व-बोध संपन्न रचनाकार की मानसिकता में क्या अंतर होता है। अज्ञेय के व्यक्तित्व में यह रूपान्तरण महत्वपूर्ण है, यह उनकी रचनाशीलता को अनुशासित करता है।

अज्ञेय ने विभिन्न विधाओं में विपुल साहित्य की रचना की है। अज्ञेय-साहित्य का विवेचन दूसरे अध्याय में किया गया है। अज्ञेय द्वारा रचित साहित्य को विधा एवं विषय की दृष्टि से कुल सात श्रेणियों में रखा गया है और प्रत्येक श्रेणी के लिए एक स्वतंत्र प्रकरण दिया गया है। ये सात श्रेणियाँ इस प्रकार हैं- 1.